व्यक्ति और व्यक्तित्व विकास

व्यक्ति व व्यक्तित्व विकास की महिमा अकथनीय है। व्यक्ति से परिवार, परिवार से समाज, समाज से राश्ट्र और राश्ट्रों से विष्व का निर्माण होता है। व्यक्ति को मिटाकर कुछ भी नहीं बन सकता। अर्थात् व्यक्ति का निर्माण ही सर्व का मूलाधार है। मैं ही हम का जनक है। मैं से मतलब व्यक्ति और हम का तात्पर्य समश्टि से होता है। व्यक्ति का मूल और महत्व उसके अपने व्यक्तित्व पर ही निर्भर रहता है। जिसका व्यक्तित्व जितना पूर्ण और उदात्त होगा,उसी के अनुसार वह परिवार-समाज-राश्ट्र और विष्व को प्रकाषमान कर सकेगा। यदि आप अखिल ब्रह्माण्ड को सुखदायी बनाना चाहते हैं तो स्वयं के व्यक्तित्व में सम्पूर्णता लाइये। परमपिता का आधार लेकर ही आप स्वयं व संसार को रोषन कर सकते हैं।

व्यक्ति से संस्था बड़ी नहीं होती है। संस्थान का महत्व व्यक्तित्व से अधिक हो नहीं सकता। व्यक्ति से संस्था को बड़ी बताने वाले साधु नहीं स्वार्थी होते हैं। व्यक्ति कितना भी बड़ा हो उसे संस्था के अधीन रहना चाहिये यह तो पागलपन की पराकाश्ठा है। यह सिरफिरों की आवाजें हैं कि संस्थायें व्यक्तित्व का निर्माण करती हैं। संस्थान कितना ही बड़ा क्यों न हो उसे उच्च व्यक्तित्व सम्पन्न व्यक्ति के अधीन होना चाहिये। संस्थाओं के साथ व्यक्तियों का भी निर्माण व्यक्ति ही करता है। वह संस्था का जनक, संस्थापक, संचालक ही नहीं जीवन (प्राण) है। यथा व्यक्ति तथा संस्था जैसी संस्था वैसा व्यक्ति कभी भी नहीं सोचना चाहिये। संस्था षरीर है तो व्यक्ति आत्मा के समान है। संस्थाओं नें आज तक न किसी व्यक्ति का निर्माण किया और न कभी कर सकेगी। उच्च व्यक्तित्व का आश्रय लेकर ही संस्थाओं का निर्माण होता है।

श्री कृश्ण, श्री राम पर अनेकों संस्थायें बनी हैं परन्तु सम्पूर्ण संस्थाओं ने मिलकर एक भी श्री कृश्ण या श्री राम जैसा व्यक्ति नही बनाया। क्राइस्ट के नाम पर असंख्य चर्च व संस्थायें चलाई जा रही है परन्तु सब ने मिलकर के क्राइस्ट जैसा एक को भी नहीं बना पाया। हजारों आर्य समाज केन्द्र चल रहे हैं परन्तु एक भी दयानन्द तैयार नहीं हो पा रहा है। किसी का व्यक्तित्व विकास हुआ होगा तो निष्चित ही उस संस्था में रहने वाले किसी व्यक्ति ने ही उत्तम व्यक्तित्व बनाया होगा। जब कोई महान व्यक्तित्व बैठा होता है तो संस्था स्वतः महान हो जाती है। महान व्यक्ति के न होने पर महान से महान संस्थान भी गिरावट के गीत गाने लगते हैं। महान संस्था की जो महत्ता है वह संस्था के कारण नहीं पर संस्था के किसी महान व्यक्ति के ही कारण है। राम के लाखों मन्दिर किसी दूसरे राम का निर्माण नहीं कर सकते हैं। कौषल्या जैसा सुषील व्यक्तित्व ही मर्यादा पुरुशोत्तम बना सकेगा। व्यक्तित्व में उच्चता महान व्यक्ति भरता है या व्यक्ति स्वयं अपना नव निर्माता बनता है। व्यक्ति षून्य संस्था कुछ भी नहीं कर सकती है। संस्था के न होने पर भी व्यक्ति बहुत कुछ कर सकता है। व्यक्ति का ही उपयोग है और व्यक्ति का ही महत्व। संस्था उपयोगी बन सकती पर व्यक्ति के बिना कुछ भी महत्व नहीं होता है।

जिसने आदर्ष व्यक्तित्व का निर्माण किया है वह फक्र से कह सकता है कि मैं गुणों से वन्दनीय बन गया गया हूँ। मेरे जीवन में कोई भी अवगुण नहीं है। अन्दर-बाहर से मैं पूर्ण निर्मल निश्पाप हूँ। निर्दोश के साथ-२ निर्विकार भी हूँ। सर्वतः संषुद्ध हूँ। मैं सदा स्थिर-षान्त-समाहित रहते हुये कर्मयोगी बन गया हूँ। यही जीवन की सम्पूर्णता है। व्यक्तित्व की यही पराकाश्ठा है। ऐसे व्यक्ति ही पूजनीय-बन्दनीय बनते हैं। जिस परिवार-समाज या राश्ट्र में ऐसा व्यक्ति है वह धन्य है।

ऐसे व्यक्तित्व से सुषोभित व्यक्ति सारे संसार के लिये धरोहर हैं। पूजा व्यक्ति के व्यक्तित्व की होती है संस्थाओं की नहीं। सद्गुणों से समलंकृत व्यक्ति से परिवार- समाज-संस्थायें-राश्ट्र-विष्व ही नहीं अखिल ब्रह्माण्ड कहता है 'तुम हमारे में भी नव जीवन का संचार करो"। प्रज्वलित होते हुये हमें भी दिप्तिमान करो। स्वयं के साथ-२ सर्व का व्यक्तित्व विकास करो।उनके ऊपर काब्य-षास्त्र, भजन-कीर्तन, कहानी-किस्से उपन्यास लिखे जाते हैं। वे सारे समाज के लिये दर्पण बन जाते हैं।

संस्थायें सदा से हैं और रहेंगी। अपनी षरीर भी एक संस्था है जिसे आत्मा संचालित करती है। षरीर आत्मा को संचालित नहीं कर सकती, आत्मा ही षरीर रूपी संस्था का विधिवत संचालन करती है। परिवार, संस्थान एक सुयोग्य व्यक्ति के संचालन से उत्तरोत्तर उन्नति को पाते जाते हैं। सुयोग्य व्यक्ति को परिवार के अधीन कर देने पर परिवार की अपार हानि होने लगती है। वही बात समाज और राश्ट्र पर भी लागू होती है। सक्षम व्यक्ति से समाज व राश्ट्र चमक उठते हैं। परन्तु ऐसे व्यक्तित्व को अधीन कर देने पर समाज या राश्ट्र का समुचित विकास हो नहीं पाता। निर्विवाद रूप से व्यक्ति और व्यक्तित्व का ही जगत में महत्व है। उच्च व्यक्तित्व की उपेक्षा होने से संसार ने अपरिमित हानि उठाई है। संस्थायें खुलती जाये और व्यक्तित्च पर महत्व पाती जायें तो संसार की समस्यायें सुलझने की बजाय और ही उलझती जायेगी। महान व्यक्तियों ने ही संस्थाओं की स्थापना की है। अगणित संस्थाओं की बुद्ध के नाम से उत्पत्ति हुई पर हजारों साल बीतने पर भी इतनी सारी संस्थाओं ने एक भी नये बुद्ध का निर्माण नहीं किया। अकेला सूर्य अनेकों को प्रकाषित करते हुये आकृश्ट किये रखता है। ऊशा अपनी छटा से सब में नूतन सौन्दर्य भर देती है। ज्योतिर्मय पथ पर आगे बढ़ते जाने वाली आत्मा कलहयुगी घोर तम सान्ध को अकेले ही क्षण में भगा सकती है। परम बल को आत्म सम्बल बनाकर दृढ़ संकल्प और ध्रुव धारणा के साथ अकेले ही आगे बढ़ते चलो तो जगत का पापाचार-भ्रश्टाचार समाप्त हो स्वर्णिम सबेरा उदय होकर रहेगा।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com